National Journal of Advanced Research
Online ISSN: 2455-216X; Impact Factor: RJIF 5.12
www.allnationaljournal.com
Volume 3; Issue 2; May 2017; Page No. 39-42

स्नातक स्तर पर शिक्षण के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी प्रबन्धतंत्र (प्राईवेट) महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों एवं सामाजिक सफलता के मध्य सह–सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन

[1] Bhanu Prakash, [2] Dr. Girish Vats
[1] Research Scholar, A.T.M.S. Group of Institutions, Hapur, Uttar Pradesh, India
[2] Principal, A.T.M.S. Group of Institutions, Hapur, Uttar Pradesh, India

सारांश
अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा नीति को धार्मिक तथा मूल्य शिक्षा से बिलकुल अलग रखा, उन्होनें राज्य द्वारा संचालित विद्यालयों में इस शिक्षा को पूर्ण रूप से बंद करके धार्मिक तटस्थता की नीति का अनुसरण किया। स्वतन्त्र भारत में भी देश को धर्म निरपेक्ष धोषित कर दिया कि राज्यकोश से चलाई जाने वाली किसी भी संस्था में किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाएगी। परिवर्तन इस संसार का नियम है लेकिन जिस तरह से हमारे समाज में मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है, वो सही नहीं है। प्राचीन काल में पाठशालाओं में धार्मिक और नैतिक शिक्षा पाठयक्रम का अभिन्न अंग थे।
मैकाइवर तथा पेज के अनुसार–"व्यक्ति तथा समाज का सम्बन्ध एक तरफ का सम्बन्ध नही है इनमें से किसी एक को समझने के लिए ही आवश्यक है।" अरस्तू के अनुसार ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इस बात का सरल अर्थ ये है कि मनुष्य अपने अस्तित्व और विकास के लिए समाज पर जितना निर्भर है, उतना और कोई प्राणी नहीं। मनुष्य में हम जो भी कुछ सामाजिक गुण देखते है वह समाज की ही देन है।" एक व्यक्ति की प्राथमिक पाठशाला उसका अपना परिवार होता है और परिवार का एक अंग है जहाँ हमें सबसे पहले शिक्षा मिलती है। परिवार और समाज के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों तथा विशेषताओं का विकास होता है। आज हमारे समाज का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है, ये भी सही है।

मूल शब्द: अध्ययन, सामाजिक गुणा, निजी प्रबन्धतंत्र, स्नातक

प्रस्तावना
कक्षा में पढ़ाई जितनी महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण यह है कि कक्षा के बाहर बच्चें स्वयं अनुभव के आधार पर क्या सीख रहे है, बच्चों को प्रेक्षण क्षेत्र अध्ययन, प्रयोग और परिचर्चा के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। इस मकसद के पाने के लिए विद्यालय को शिक्षा केन्द्र की जगह अपने आप को ऐसे केन्द्र के रूप में डालना चाहिए जहाँ ज्ञान के साथ–साथ कौशल प्राप्त किया जा सके। बच्चों को शिक्षित और तेजस्वी नागरिक बनाने में माता–पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्हे अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है।
बच्चों के सामने माता–पिता का व्यवहार, आचरण और मूल्यों की मिसाल रखनी चाहिए। इससे बच्चों के मन में माता–पिता के प्रेम और श्रद्धा का विकास होगा। तथा वे उन्हें अपना आदर्श मानेगें। बच्चे जब 18 वर्ष के होते है तब तक उन्हे संवारने का सामूहिक मिशन माता–पिता शिक्षकों, घर एंव विद्यालय परिसर का जिम्मा होता है किन्तु जब वे थोड़े बड़े होकर विद्यालय एंव कालेज जाने लायक होते है तो उन्हें मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता होती है। ऐसे में कालेज का माहौल का बड़ा महत्व है जहाँ छात्रों का चरित्र निर्माण किया जा सके।
हम ऐसी शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था नहीं कर सकते जिसमें पढ़ाई शुरू करने से लेकर रोगजार पाने तक, सम्पूर्ण अवधि के दौरान बच्चों के चेहरे पर मुस्कान बनी रहे। क्या ऐसा करना संभव है? जो हाँ सम्भव है। यदि हम सम्पूर्ण किसी प्रणाली को सृजनशील बना दे और रूझान व क्षमता के आकार पर सभी युवाओं को रोजगार उपलब्ध करा सकें। प्राइमरी स्कूल के स्तर पर बच्चों की सृजनशीलता को प्रोत्साहित किया जा सकता है। सेकेडरी स्कूल के बच्चों की सृजनशीलता में और निखार लाया जा सके। उद्देश्ययही होना चाहिए कि अंततः उच्च शिक्षा प्राप्तकर छात्र स्वावलंबी बने जिससे वे उद्यमशील हो। उनमें मूल्यों का विकास हो और रोजगार खोजने के बजाए खुद रोजगार पैदा करे।

अध्ययन की आवश्यकता
शिक्षा आधुनिक युग की प्रथम आवश्यकता मानी जा सकती है। ग्रामीण समुदाय का जीवन स्तर ही देश का जीवन स्तर माना जाता है। इस समुदाय की प्रगति सम्पूर्ण देश की प्रगति मानी जाती है। भारत को उन्नत व ग्रमीण विकास के क्षेत्र को सर्थक बनाया जाना चाहिये रचानात्मक कार्यो के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र मे बेकार पड़ी ग्रामीण समुदाय की अपार जनशक्ति और साधन का समुचित उपयोग किया जाना चाहियें।

शोध अध्ययन के उद्देश्य
1. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के छात्रों (कुल छात्र–छात्राओं) के बीच मूल्यों की तुलना करना।
2. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान की छात्राओं के बीच मूल्यों की तुलना करना।
3. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के छात्रों के बीच मूल्यों की तुलना करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना
1. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के छात्रों (कुल छात्र–छात्राओं) के बीच मूल्या में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान की छात्राओं के बीच मूल्योमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के छात्रों के बीच मूल्यो में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन

क्षेत्रः शोध अध्ययन बरेली मण्डल के स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों तक ही सीमित होगा।

- न्यायदर्शः कला व विज्ञान वर्ग के स्नातक स्तर के अध्ययनरत कुल 600 छात्रों के शोध न्यायदर्श हेतु चुना जायेगा।
- लिंगः स्त्री लिंग व पुरलिंग दोनों प्रकार के छात्रों को षोध अध्ययन हेतु चुना जायेगा।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध कर्त्ता के द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधी Descriptive survey Method का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वयं निर्मित शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है जिनमें स्मृति मापनी, अभिवृन्ति मापनी, आदि उपकरणों का प्रयोग किया गया है

प्रदत्त संकलन की विधि

प्रदत्त संकलन के हेतु शोधार्थी ने न्यादर्श के रूप में चयनित बरेली मण्डल के स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालया 600 छात्रों से स्मृति मापनी– अभिवृत्ति मापनी को प्रशासित किया गया। इसके उपरान्त सांख्यकीय विश्लेषण किया गया है।

सारणी 1: बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला और विज्ञान वर्ग के छात्रों (पुरूष एवं महिला) के मूल्यों के मध्य सार्थकता

मूल्य	कला वर्ग N= 243		विज्ञान वर्ग N= 243		T- मूल्य	सार्थकता का स्तर
	Mean	S D	Mean	S D		
धार्मिक	12-83	3-17	13-34	3-29	1-88	N.S.
समाजिक	13-02	3-14	15-60	3-39	8-67	0-01
प्रजातान्त्रितक	14-75	3-47	15-60	3-50	2-87	0-01
सौन्दर्यपरक	10-83	2-92	11-67	3-41	3-17	0-01
आर्थिक	11-58	3-37	11-10	3-81	1-60	N.S.
ज्ञानात्मक	12-55	3-41	12-79	3-35	4-33	0-01
सुखवादी	11-21	3-12	11-35	3-53	0-48	N.S.
सामर्थ्य	10-42	2-78	10-25	3-40	0-65	N.S.
परिवारिक प्रतिष्ठात्मक	11-76	3-25	11-58	4-13	0-60	N.S.
स्वास्थ्य	10-88	3-50	10-93	3-14	0-18	N.S.

निष्कर्ष

सारणी 1 यह प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के धार्मिक मूल्य के लिये ज. मूल्य 1.88 है जो कि सार्थक नही है सार्थकता का स्तर 0.05 है। इसलिए शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के मध्य धर्मिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर स्वीकार नही किया गया हैं। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के धार्मिक मूल्य में कोई भी सार्थक अन्तर नही पाया गया लेकिन यह उचसपदह मततमत (न्यादर्श त्रुटि) के कारण हो सकता है। इसलिए यह व्याख्या की गयी की बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला और विज्ञान वर्ग के छात्रों के धार्मिक मूल्य में कोई भी सार्थक अन्तर नही है।

सारणी 1 यह भी प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सामाजिक मूल्य के लिये ज. मूल्य 8.67 है। जो कि सार्थक है जिसकी सार्थकता का स्तर 0.01 है। इसलिए शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग निम्न छात्रों के सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर नही है ऐसा अस्वीकृत किया गया। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सामाजिक मूल्यों में पाया गया अन्तर वास्तविक है। यह न्यादर्श त्रुटि के कारण नही हैं। विज्ञान वर्ग छात्रों के सामाजिक मूल्य का माध्य प्राप्त अंक 15.60 है जो कला वर्ग छात्रों के सामाजिक मूल्य का माध्य प्राप्त अंक 13.02 से अधिक है। इस प्रकार यह व्याख्या की गयी कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग छात्रों के सामाजिक मूल्य कला वर्ग छात्रों के सामाजिक मूल्यों से अधिक है।

सारणी 1 यह प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के प्रजातान्त्रिक मूल्य के लिये ज. मूल्य 2.86 है जो कि सार्थक है जिसकी सार्थकता का स्तर 0.01 है। इसलिए शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के प्रजातान्त्रिक मूल्य में सार्थक अन्तर नही है ऐसा अस्वीकृत किया गया। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के मध्य प्रजातान्त्रिक मूल्य में पाया गया अन्तर वास्तविक है न्यादर्श की त्रुटि के कारण नही है। विज्ञान वर्ग छात्रों के प्रजातान्त्रिक मूल्यो के माध्य का प्राप्तांक 15.60 है जो कला वर्ग छात्रों के प्रजातान्त्रिक मूल्यों के माध्य के प्राप्तांक 14.75 से अधिक है इस प्रकार यह व्याख्या की गयी कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग छात्रों के प्रजातान्त्रिक मूल्य कला वर्ग छात्रों के प्रजातान्त्रिक मूल्यों से अधिक है।

सारणी 1 यह प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सौन्दर्यपरक मूल्य के लिये ज. मूल्य 3.17 है जो कि सार्थक है। सार्थकता का स्तर 0.01 है। इसलिए शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सौन्दर्यपरक मूल्य में सार्थक अन्तर नही है। ऐसा अस्वीकृत किया गया। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के मध्य सौन्दर्यपरक मूल्य में पाया गया अन्तर वास्तविक है न्यादर्श की त्रुटि के कारण नही है। उच्च सृजनात्मक छात्रों के सौन्दर्यपरक मूल्य के माध्य का प्राप्तांक 11.67 है जो निम्न

सृजनात्मक छात्रों के सौन्दर्यपरक मूल्य के माध्य प्राप्तांक 10.83 से अधिक है इस प्रकार यह व्याख्या की गयी कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग छात्रों के सौन्दर्यपरक मूल्य कला वर्ग छात्रों के सौन्दर्यपरक मूल्यों से अधिक है।

सारणी 1 प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के आर्थिक मूल्य के लिये ज. मूल्य 1.60 है जिसकी सार्थकता का स्तर 0.05 है। जो कि सार्थक नही है। अतः शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है। ऐसा स्वीकार किया गया कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के आर्थिक मूल्य का गणना करके पाया गया अन्तर वास्तविक नही है इसमें न्यादर्श त्रुटि हो सकती है। इस प्रकार यह व्याख्या की गयी। बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के आर्थिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी 1 यह प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के ज्ञानात्मक मूल्य के लिये ज. मूल्य 4.33 है जो कि सार्थक है जिसकी सार्थकता का स्तर 0.01 है। अतः शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के ज्ञानात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर नही हैं ऐसा अस्वीकृत किया गया। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के मध्य ज्ञानात्मक मूल्य में पाया गया अन्तर वास्तविक है न्यादर्श की त्रुटि के कारण नही हैं। विज्ञान वर्ग छात्रों के ज्ञानात्मक मूल्य के माध्य का प्राप्तांक 13.79 है जो कला वर्ग छात्रों के ज्ञानात्मक मूल्य के माध्य के प्राप्तांक 12.55 से अधिक हैं इस प्रकार यह व्याख्या की गयी कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग छात्रों के ज्ञानात्मक मूल्य में कला वर्ग छात्रों के ज्ञानात्मक मूल्य की अपेक्षा अधिक सार्थक है।

सारणी 1 यह प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सुखवादी मूल्य के लिये ज. मूल्य 0.48 है जो कि सार्थक नही है सार्थकता का स्तर 0.05 है। अतः शून्य परिकल्पना हैं कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सुखवादी मूल्य में कोई भी सार्थक अन्तर नही है। ऐसा स्वीकार किया गया। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के मध्य सुखवादी मूल्य मे पाया गया अन्तर वास्तविक नही है यह न्यादर्श त्रुटि के कारण हो सकता है। इस प्रकार यह व्याख्या की गयी कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सुखवादी मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी 1 यह प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सामर्थ्य मूल्य के लिये ज. मूल्य 0.65 है जोकि सार्थक नही है सार्थकता का स्तर 0.05 है। इसलिए शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सामर्थ्य मूल्य में कोई भी सार्थक अन्तर नही है। ऐसा स्वीकार किया गया कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के मध्य सामर्थ्य मूल्य में पाया गया अन्तर वास्तविक नही है यह न्यादर्श त्रुटि के कारण हो सकता है यह व्याख्या की गयी की बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सामर्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी 1 में यह स्पष्ट है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के पारिवारिक प्रतिष्ठात्मक मूल्य के लिए ज. मूल्य 0.60 है जो कि सार्थक नही है। सार्थकता का स्तर 0.05 है। अतः शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के पारिवारिक प्रतिष्ठात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर नही है। ऐसा स्वीकार किया गया। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के मध्य पारिवारिक प्रतिष्ठात्मक मूल्य में पाया गया अन्तर वास्तविक नही है। यह न्यादर्श में त्रुटि के कारण हो सकता है। इस प्रकार यह व्याख्या की गयी कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के पारिवारिक प्रतिष्ठात्मक मूल्यों मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी 1 का परीक्षण यह प्रदर्शित करता है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के स्वास्थ्य मूल्य के लिए ज. मूल्य 0.18 है जो कि सार्थक नही है सार्थकता का स्तर 0.05 है। अतः शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के स्वास्थ्य मूल्य में सार्थक अन्तर नही है ऐसा स्वीकार किया गया। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के स्वास्थ्य मूल्यों की गणना उपरान्त यह पाया गया कि अन्तर वास्तविक नही है। यह न्यादर्श त्रुटि के कारण हो सकता है। अतः यह व्याख्या की जा सकती है कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के स्वास्थ्य मूल्यों में कोई भी सार्थक अन्तर नही है।

1.	**पाल. हंसराज शर्मा मंजुलता**	**प्रतिभाशालियों की शिक्षा, शिपरा पब्लिकेशन,दिल्ली**
2.	भटनागर, ए0बी0	अधिगम कर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया लाल बुक डिपों – मेरठ
3.	झा, दिलीप कुमार	शोध कार्य, श्री लाल बहादुर संस्कृत विघापीठ विश्वविघालय, दिल्ली
4.	लाल, रमन बिहारी	भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्यायें आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ
5.	शर्मा. पं0 श्री राम	अपरिमित संभावनाओं का आधार मानवी व्यक्तित्व, प्रकाशक, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
6.	जयसवाल. डा0 सीताराम	सामान्य मनोविज्ञान, आर्य बुक डिपों नई दिल्ली
7.	कृष्ण मूर्ति जे0	संस्कृति का प्रश्न कृष्णमूति फाउनडेशन इंडिया राजघाट फोर्ट वाराणसी
8.	वुमार, आनन्द	आत्मविश्वास, राजपाल एण्ड संन्स, दिल्ली
9.	जोशी, धनंजय	नैतिक शिक्षा एवं नागरिक शोध कनिडक पब्लिशर्स, दिल्ली

संन्दर्भ ग्रन्थ

1. Allport, Vernon & Linndzey A Study of Values. Boston. Houghton Miffin. U.S.A. 1951
2. Armstrong WH. Study is hardwork. Psychological Abstracts 1956, 30.
3. Gulford JP. Fundamental Statistics in Psychology and Educaiton. Mc Graw Hill. New York, 1956
4. Gulford JP. The Stucture of Intellect. Psychological Bulletin 1956; 53(4)
5. Chester H, Marrie R. Encyclopedia of Educational Research. The Macmillan co. New York, 1960.
6. Mitzel HE. Encyclopedia of Educational research. 5th Ed. Macmillan co. New Delhi, 1960
7. Allport GV. Pattern of Growth in Personality. Holt, Rinehart and Winston, 1961.
8. Torrence EP. Education and Creative Potential. Univeristy of Minnesota Press, Minnesota, 1962.
9. Torrence EP. Guiding Creative Talent. Prentice Hall, Inc. Eaglewood Clift, New Haerry, 1962.
10. Mackinnon DW. Creativity and images of the self in education, 1963.

11. Taylor CW. Scientific Creativity: Ist Recognition and Development. Wiley. New York, 1963.
12. Raina MK. Sex Difference in Creativity in India, Journal of Creative Behavior, 1963; 3:111-114.
13. Drevadahl JE. Some Developmental and Environmental Factors in Creativity. In Taylor, C.W. (Ed) Widening Horizons in Creativity, Wiley New York, 1964.
14. Murphy G. An Introduction to Psychology. Oxford Book Co. Calcutta Press, 1964.
15. Barron F. Creative Person and creative process. Holt, Rinehart And Winston, New York, 1965.
16. Dreyer AS, Wells MB. Parental Values, Parental Control and Creativity in Young Children. Journal of Marriage and The family. 1966; 28:83-88.
17. Munro BC, Laycock SR. Educational Psychology. The Cops Clark, Toronto, 1966.
18. Gulford JP. Creativity: Yesterday, Today and Tomorrow. Journal of Creative Behavior. 1967; 1:3-13.
19. Gulford JP. The nature of Human Intelligence. Mc Graw Hill. New York, 1967.
20. Raina MK. A study of some correlates of creativity in Indian students. Ph.D. University of Rajasthan, 1968.